© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

हिंदी सहित्य में गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख सिद्धांत का अध्ययन

Jyoti

jyotisehrawatredhu123@gmail.com

सार

गांधीवादी विचारधारा सिद्धांतों और मूल्यों का एक समूह है जिसे महात्मा गांधी द्वारा विकसित किया गया था, जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे। यह एक ऐसा दर्शन है जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति प्राप्त करने के साधन के रूप में अहिंसा, सत्य, प्रेम और आत्मनिर्भरता पर जोर देता है। गांधी की शिक्षाएँ उनके धार्मिक विश्वासों और एक वकील, कार्यकर्ता और राजनीतिक नेता के रूप में उनके अनुभवों से प्रभावित थीं। गांधीवादी विचारधारा के मूल सिद्धांतों में सभी मनुष्यों की अंतर्निहित गरिमा में विश्वास, सामाजिक न्याय और समानता का महत्व, व्यक्तिगत और सामूहिक आत्म-संयम की आवश्यकता, अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति और स्थायी जीवन की आवश्यकता शामिल है। . गांधी का मानना था कि ये सिद्धांत एक अधिक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण समाज बनाने में मदद कर सकते हैं, और उन्होंने जीवन भर उन्हें बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया।

मुख्य शब्द : गांधीवादी, विचारधारा, सिद्धांत, राजनीतिक, आत्मनिर्भरता आदि ।

प्रस्तावना

अहिंसा, सत्य और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित गांधीवादी विचारधारा को व्यापक रूप से 20वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली दर्शनों में से एक माना गया है। इस विचारधारा के प्रणेता महात्मा गांधी ने अन्याय और उत्पीड़न के शांतिपूर्ण प्रतिरोध की वकालत की, जिसके कारण भारत और उसके बाहर महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन हुए। वर्तमान युग में, जहां दुनिया असमानता, असहिष्णुता, जलवायु परिवर्तन और भू-राजनीतिक तनाव जैसी कई चुनौतियों का सामना कर रही है, गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता और भी महत्वपूर्ण हो गई है। समकालीन समाज उन मुद्दों से जूझ रहा है जिनके लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो नैतिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित है। गांधीवादी विचारधारा इनमें से कई समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकती है, क्योंकि यह नैतिक और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर व्यक्तिगत और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर देती है। अहिंसा, सत्य और आत्मनिर्भरता के सिद्धांत वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक माहौल में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं, जहां संघर्ष और तनाव तेजी से हिंसक और ध्रुवीकृत होते जा रहे हैं।

सहित्य की समीक्षा

(तिवारी, 2022) ने "*गांधीजी के सिद्धांतों एवं दर्शन की 21 वीं सदी में प्रासंगिकता -एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*" का अध्ययन किया और पाया की मोहन दास करमचंद गांधीजी एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने मानव समाज की प्रत्येक पहलू पर चाहे वे नस्लीय एवं जातिगत भेदभाव हो, ग्राम स्वराज हो, आर्थिक विषमताएं या स्त्री शिक्षा, उनका चिंतन समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

(सौरज, 2019) ने "*महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता*" का अध्ययन किया और पाया की महात्मा गांधी की अर्थव्यवस्था व अर्थशास्त्र के बारे में बहुत मौलिक सोच थी। यह सोच उस समय के प्रचलित विचारों की परवाह न कर सीधे सीधे ऐसी नीतियों की मांग करती थी जिससे गरीबों को राहत मिले। साथ ही उन्होंने ऐसे सिद्धांत उपनाने को कहा जिनसे दुनिया में तनाव व हिंसा दूर हो तथा पर्यावरण को नुकसान न पहुंचें। गांधीजी के लिए विश्व शांति, संतोष व पर्यावरण की रक्षा सबसे महत्वपूर्ण थे। वह इसी के अनुकूल आर्थिक नीतियों की बात करते थे।

(अरशद, 2014) ने "*भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका*" का अध्ययन किया और पाया कि राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी की भूमिका या भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक जन आंदोलन बनाने के लिए महात्मा गांधी द्वारा अपनाए गए तरीके। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी की भूमिका निस्संदेह सबसे उल्लेखनीय थी। मोर्चा 1919 से 1947 ई. राष्ट्रपिता। महात्मा गांधी उन महापुरुषों में से एक थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानव जाति की सेवा में समर्पित कर दिया।

(सुभीता, 2019) ने "*वर्तमान संदर्भ में महात्मा गांधी के सिद्धांतों का महत्व*" एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के "गणपतराव अरवाडे कॉलेज" का अध्ययन किया और पाया कि स्वच्छ भारत मिशन महात्मा गांधी के स्पष्ट आह्वान का एक सचेत अनुस्मारक है कि स्वच्छता अधिक है स्वतंत्रता से महत्वपूर्ण है। राष्ट्र को स्वच्छता के इस विचार को प्रभावित और संप्रेषित करना महात्मा गांधी का विचार था।

(साहा और भुइमाली, 2017) ने *"गांधी के विशेष संदर्भ के साथ अहिंसा का एक संक्षिप्त इतिहास"* का अध्ययन किया और पाया कि अहिंसा गांधीवादी दर्शन के साथ-साथ आंदोलन की प्रमुख अवधारणा या दिल है। जीवन के एक तरीके के रूप में गांधीवाद इस बात की वकालत करता है कि सत्य ही ईश्वर है और अहिंसा केवल उसे प्राप्त करने का साधन है। गांधी के लिए "सत्य" की प्राप्ति मानव चेहरे का अंतिम लक्ष्य है।

(गुप्ता क.व., 2016) ने "*गांधी के राष्ट्रवादी आंदोलन (1920 - 1947): स्वतंत्रता की ओर एक अहिंसक पथ*" का अध्ययन किया और पाया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम उपनिवेशवाद और

साम्राज्यवाद के खिलाफ सबसे बड़े मुक्ति आंदोलनों में से एक था। यह लड़ाई उन देशों के लिए प्रेरणा का एक प्रभावी और मजबूत स्रोत बनी हुई है जो विदेशी प्रभुत्व और शोषण को स्वीकार करने से इनकार करते हैं; उन देशों के लिए जो स्वतंत्रता, समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और लोकतंत्र का अनुमान लगाते हैं।

(सैनी सुमित, 2017) ने "*महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक प्रतिरोध*" का अध्ययन किया और पाया कि 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान विश्व इतिहास के सबसे विनाशकारी काल में से एक के संदर्भ में, महात्मा गांधी मानवता की सेवा के आदर्शों का अभ्यास करने में सक्षम थे। और इसलिए सभी मनुष्यों को आशा दें कि उच्चतम सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना और इसके नैतिक आधार पर जोर देते हुए राजनीति में संलग्न होना हमेशा संभव है।

गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख सिद्धांत

गांधीवादी विचारधारा कई प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है जो नैतिकता, नैतिकता और आध्यात्मिकता पर आधारित हैं। ये सिद्धांत हैं:

अहिंसा: यह गांधीवादी विचारधारा की आधारशिला है, और इसमें सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए शांतिपूर्ण साधनों का उपयोग शामिल है।

सत्य: गांधी का मानना था कि सत्य सभी सामाजिक और राजनीतिक प्रगति की नींव है। उन्होंने राजनीति, व्यवसाय और व्यक्तिगत संबंधों सहित जीवन के सभी पहलुओं में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्व पर जोर दिया।

स्वदेशी: स्वदेशी एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग गांधी ने स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं और उत्पादों के उपयोग की प्रथा का वर्णन करने के लिए किया था।

सत्याग्रह: सत्याग्रह एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल गांधी अन्याय और उत्पीड़न के प्रति अहिंसक प्रतिरोध का वर्णन करने के लिए करते थे।

अहिंसा: अहिंसा एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल गांधी सभी जीवित प्राणियों के प्रति अहिंसा के सिद्धांत का वर्णन करने के लिए करते थे।

सर्वोदय: सर्वोदय एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल गांधी सभी के लिए सामाजिक उत्थान के सिद्धांत का वर्णन करने के लिए करते थे। गांधी के अनुसार, सर्वोदय के लिए समाज के सभी सदस्यों के लिए सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

गांधीवादी विचारधारा का ऐतिहासिक संदर्भ

गांधीवादी विचारधारा का ऐतिहासिक संदर्भ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष में निहित है। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था, जिसके कारण व्यापक गरीबी, सामाजिक असमानता और राजनीतिक उत्पीड़न हुआ। गांधी का भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में प्रवेश 1915 में हुआ, जब वे दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए अहिंसक प्रतिरोध की वकालत करते हुए, वह जल्दी ही कांग्रेस के एक नेता के रूप में प्रमुखता से उभरे। 1920 में, उन्होंने असहयोग आंदोलन शुरू किया, जिसमें भारतीयों को ब्रिटिश शासन का विरोध करने के साधन के रूप में ब्रिटिश संस्थानों और सामानों का बहिष्कार करने का आह्वान किया गया। आंदोलन को पूरे भारत में व्यापक समर्थन मिला, लेकिन अंततः 1922 में चौरी चौरा में एक हिंसक घटना के बाद इसे बंद कर दिया गया। गांधी का अगला प्रमुख अभियान नमक सत्याग्रह था, जो 1930 में शुरू हुआ था। इस अभियान में भारतीयों से ब्रिटिश नमक का बहिष्कार करने और समुद्री जल से अपना नमक बनाने का आह्वान किया गया था। अभियान ने व्यापक भागीदारी देखी और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया।

गांधीवादी विचारधारा की विरासत

गांधीवादी विचारधारा की विरासत दूरगामी है और दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करती रहती है। गांधी के अहिंसा के दर्शन और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का भारत और दुनिया भर में सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

भारत में, गांधी की शिक्षाओं और नेतृत्व ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए देश के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिंसा के उनके दर्शन और आत्मनिर्भरता और स्वदेशी के उनके आह्वान ने कई भारतीयों को ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों का बहिष्कार करने और अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित किया। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत की गांधी की दृष्टि देश के नेताओं और लोगों को प्रेरित करती रही।

निष्कर्ष

गांधीवादी विचारधारा को अपनाने के लिए एक दूसरे के साथ, पर्यावरण के साथ, और बड़े पैमाने पर दुनिया के साथ अपने संबंधों के बारे में हम कैसे सोचते हैं, इसमें एक मौलिक बदलाव की आवश्यकता है। इसका अर्थ है सहयोग, करुणा और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान को अधिक महत्व देना और इस विचार को अस्वीकार करना कि प्रगति दूसरों या पर्यावरण की कीमत पर आनी चाहिए। आधुनिक समाज में गांधीवादी सिद्धांतों को लागू करने

के लिए सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक व्यवस्था और राजनीतिक ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता होगी। आखिरकार, आधुनिक समाज में गांधीवादी विचारधारा की सफलता इसके सिद्धांतों को अपनाने और उन्हें अपने दैनिक जीवन में अमल में लाने की हमारी सामूहिक इच्छा पर निर्भर करेगी। ऐसा करके, हम अपने लिए, अपने समुदायों के लिए और समग्र रूप से ग्रह के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सूरजीत कौर जोली "(सम्पादिका) गांधी एक अध्ययन" नई दिल्ली 2007, पृ.सं-104
2. सदर वर्मा 'मेटाफिजिकल फाउण्डेशन ऑफ महात्मा गांधीजी ", नई दिल्ली 1970 पृ.सं.-42
3. बापू की छाया, "नवजीवन द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण पृ.सं.-93
4. टुण्डक डॉ. सी. एन. हिन्द स्वराज की नवीनतम अवधारणा", ननन्दलाल प्रकाशन जयपुर 2016 पूसं.-101-102
5. डी. जी. तेन्दुलकर "महात्मा गांधी भाग ४" बम्बई पू.सं. -380
6. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद "गांधी जी की देन" पृ.सं-90
7. यंग इण्डिया 4-6-1927
8. हिन्दी नव जीवन 27-10-1927
9. दृष्टिकोण मंथन, पाक्षिक पत्रिका, नई दिल्ली दिसम्बर 2012
10. दैनिक भास्कर सम्पादकीय पृष्ठ 24-4-2010